





# आइएमए और झासा ने राज्य के हेल्थ वर्करों से भी समर्थन मांगा

# 1 मार्च से हड्डताल पर रहेंगे राज्य के डॉक्टर

हड्डताल के दौरान हॉस्पिटलों में केवल इंगरेजी सर्विस घालू रहेगी



की घटना के बाद भी सरकार की एसा कदम उठाना पड़ रहा है। आइएमए ने हजारीबाग में डॉक्टरों के लिये जान से वे एकशन नहीं लिये जाने से वे आरोपी अधिकारी डॉक्टरों को पद से हटाने की मांग की है। सिविल सर्विस घटना में केवल इमरजेंसी सर्विस चालू रहेगी। आइएमए और झासा ने राज्यभर के हेल्थ वर्करों से भी समर्थन मांगा है, ताकि उनका आंदोलन कमज़ोर न कर दिया जाए।

गढ़वा में डॉक्टर पहले से ही अनिश्चितकालीन हड्डताल पर रहे हैं। इमरजेंसी की सेवाओं को छोड़ कर अब पूरे राज्य में आंदोलन की तैयारी है। डॉक्टरों का कहना है। इसलिए उन्हें

दिनों जेप्मपम समर्थकों द्वारा सिविल सर्विस, सरकारी हॉस्पिटल डीएस और डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम मैनेजर के साथ गाली गलौज के बाद मारपीट की घटना को अंजाम दिया गया। इसके विरोध में 25 फरवरी को गढ़वा में डॉक्टरों ने अनिश्चितकालीन हड्डताल कर दी। साथ ही मांग की गयी कि अगर 72 घंटे में दोषियों पर कार्रवाई नहीं की जाती है, तो राज्यभर में आंदोलन किया जावेगा। इसी के तहत डॉक्टर पर रहेंगे। इस दौरान हॉस्पिटलों में केवल इमरजेंसी सर्विस चालू रहेगी। आइएमए और झासा ने राज्यभर के हेल्थ वर्करों से भी समर्थन मांगा है, ताकि उनका आंदोलन कमज़ोर न कर दिया जाए।

गढ़वा में डॉक्टर पहले से ही अनिश्चितकालीन हड्डताल पर रहे हैं। इमरजेंसी की सेवाओं को छोड़ कर अब पूरे राज्य में आंदोलन की तैयारी है। डॉक्टरों का कहना है। इसलिए उन्हें

दीपक प्रकाश, बाबूलाल सहित हजारों कार्यकर्ताओं ने सुनी पीएम के मन की बात, कहा

**मन की बात कार्यक्रम आम आदमी के दिलों को छूता है**



आजाद सिपाही संवाददाता

राज्यभरी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 98 वां संस्करण रविवार को प्रसारित हुआ।

भाजपा के हजारों कार्यकर्ताओं ने आम जनता के साथ प्रदेश के सभी जिलों, मंडलों में बूथों पर कार्यक्रम बन चुका है। प्रधानमंत्री के संबोधन में पूरा भारत एक अच्छा दीपक प्रदेश जैसा रहा है। आज देश की जनता और भाजपा के कार्यकर्ता हर महीने के अंतिम दिनाई पड़ती है।



कार्यक्रम मन की बात का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

गिरिही जिले के कोई बांक गांव के बूथ पर विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने मन की बात सुनी। उन्होंने कहा कि पीएम के मन की बात कार्यक्रम आम आदमी के दिलों को छूता है। प्रधानमंत्री के संबोधन में भारत भारत की सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक सरोकारों और इं-संजीवी एप चिकित्सा जगत में अब सांस्कृतिक पहचान की ज़िलक दिखाई पड़ती है।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने राज्यी ग्रामीण जिला अंतर्गत खिजरी विधान सभा क्षेत्र के 192 नंबर बूथ पर कार्यक्रम को सुना। उन्होंने कहा कि नये भारत की पहचान भारत की गौवेशाली सांस्कृतिक परंपरा से तो ही ही पूर्ण अब प्रधान मंत्री के नेतृत्व में नया भारत जिटल भारत के रूप में तेजी से उभर रहा है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अब इं-संजीवी एप चिकित्सा जगत में नयी क्रांति लेकर आया है।

**भाजपा कभी भी स्वीकार नहीं, आदिवासियों का हित केवल कांग्रेस के साथ : बंधु तिर्की**

आजाद सिपाही संवाददाता

राज्यभरी। आदिवासियों के निपटने के लिए उन्होंने अगे कहा कि भाजपा और आरएसएस को निशाने पर लिया। यापुर में आयोजित कांग्रेस के 85वें राष्ट्रीय अधिवेशन में रविवार को उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आएसएस) ने केवल और केवल शब्दों के मायाजाल में

काम किया है। इस दौरान अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, केसी बेंगुपालाल, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित अन्य नेताओं की भी उपस्थिति रही।

पैटा, चनापिकार कानून कांग्रेस की देना

श्री तिर्की ने कहा कि कांग्रेस ने ही आदिवासियों के लिए उन्होंने कोई

फ़रमा रखा है। आज देश की जनता नहीं है। न ही

आदिवासियों को लिए उन्होंने कोई

फ़रमा रखा है। उन्होंने कोई





# संपादकीय

## महंगाई के खिलाफ लड़ाई खत्म नहीं हुई

**भा** रत के साथियों की और कार्यक्रम कार्याचयन मंत्रालय द्वारा जनवरी महीने के लिए जारी किए गए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित मुद्रास्फीटि के अनुमति ने इस उमीद को खस्त कर दिया है कि महंगाई के खिलाफ हमारी लड़ाई स्थिर हो गयी है। नवंबर और दिसंबर के लिए मुद्रास्फीटि की संख्या में कमी अल्पकालिक थी। जनवरी में भारीत रिजिव बैंक की ऊपरी सीमा से ऊपर 6.52 प्रतिशत पर मुद्रास्फीटि के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उच्च मुद्रास्फीटि 6.85 प्रतिशत थी। हालांकि समग्र मुद्रास्फीटि से अधिक यह खाता मुद्रास्फीटि थी, जिसमें कई लोगों को चौंका दिया, जबकि समग्र उपभोक्ता खाता मूल्य मुद्रास्फीटि दिसंबर के लिए 4.2 प्रतिशत से बढ़ कर जनवरी में 6 प्रतिशत हो गयी। अनाज मुद्रास्फीटि की दर 16 प्रतिशत से अधिक थी, जो नवीं शृंखला को अपनाने के बाद से सबसे अधिक थी। ग्रामीण अनाज मुद्रास्फीटि 17.2 प्रतिशत दर्द की गयी, जो शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक थी। जहां यह दर 13.8 प्रतिशत थी। भारत की जनवरी की मुद्रास्फीटि की संख्या उमीदों के विपरीत थी लेकिन वास्तव में यह आशयजनक नहीं है। हाल के मुद्रास्फीटि प्रकरण की दो विशेषताएं हैं जो विशेष रूप से चिंताजनक हैं। सबसे पहले अनाज की मुद्रास्फीटि एक चुनौती बनी हुई है। जो मुख्य रूप से गेहूं की कीमत से प्रेरित है, लेकिन यह दबाव अब अन्य खातों पदार्थों में फैल गये हैं, जबकि गेहूं की कीमतों में एक साल पहले की तुलना में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिसके पिछले एक दशक में एक रिकार्ड है। यहां तक कि पिछले कई महीनों में बढ़ती प्रवृत्ति के बीच चालक की मुद्रास्फीटि भी 10 प्रतिशत थी। भोजन के भीतर अंडे और दुध ने भी 9 प्रतिशत की मुद्रास्फीटि और बढ़ती प्रवृत्ति की सूचना दी। अंडे की महंगाई दर पिछले वर्ष अवृद्धि तक नकारात्मक थी, लेकिन तब से इसमें तेजी से उछाल आया है। दूसरी बात यह है कि जबकि खाता मुद्रास्फीटि एक चुनौती बनी हुई है, तो मुद्रास्फीटि अब अन्य वस्तुओं और सेवाओं तक फैल गयी है, जिसमें यह और अधिक व्यापक हो गयी है। परिवहन और यांत्रिक लगभग 9 से 10 प्रतिशत के संयुक्त भार से कथा 6 प्रतिशत से कम की मुद्रास्फीटि दर बाता एकमात्र समूह था। ये गैर-खाता सूक्ष्म के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में 50 प्रतिशत से अधिक वजन के लिए लेखांकन मुद्रास्फीटि 6 प्रतिशत या अधिक थी। कपड़े और जूते 9.1 प्रतिशत, ईंधन और प्रकाश 10.8 प्रतिशत, घरेलू सामान और सेवाएं 7.3 प्रतिशत पर थीं जबकि स्वास्थ्य 6.4 प्रतिशत, व्यक्तिगत देखभाल 9.6 प्रतिशत और विविध सूक्ष्म 6.2 प्रतिशत पर था। घटें कुपी लाभ और स्थिर मजदूरी के बीच ग्रामीण अर्थव्यवस्था अभी भी संकट में है।

**अनाज मुद्रास्फीटि की दर 16 प्रतिशत से अधिक थी, जो नवीं शृंखला को अपनाने के बाद से सबसे अधिक थी। ग्रामीण अनाज मुद्रास्फीटि 17.2 प्रतिशत दर्द की गयी, जो शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक थी। जहां यह दर 13.8 प्रतिशत थी। भारत की जनवरी की मुद्रास्फीटि की संख्या उमीदों के विपरीत थी लेकिन वास्तव में यह आशयजनक नहीं है। हाल के मुद्रास्फीटि प्रकरण की दो विशेषताएं हैं जो विशेष रूप से**

### अभिमत आजाद सिपाही

यूप्स ज्वाइट बौफ ऑफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल मार्क मिले ने नवंबर 2022 में कहा था कि यूक्रेन पर रुसी आक्रमण के परिणामस्वरूप मारे गये लड़ाकों की संख्या 2 लाख की सीमा में हो सकती है। 40 हजार से अधिक यूक्रेनी नागरिक या इससे जी अधिक संख्या में लोग मारे गये थे। आक्रमणकारियों द्वारा स्पष्ट रूप से बलात्कार, यातना और अन्य अत्याचार एक और भयानक तथ्य हैं जो सत्य को स्थापित करने और अपारिधियों पर मुकदमा चलाने के लिए नियमित अंतर्राष्ट्रीय आपारिधिक जांच चलायी जायेगी।

## रूस-यूक्रेन युद्ध : न कोई जीता न कोई हारा

### मनीष तिवारी

यूक्रेन पर रुसी आक्रमण का एक साल पूरा हो गया है। यूप्स ज्वाइट बौफ ऑफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल मार्क मिले ने नवंबर 2022 में कहा था कि यूक्रेन पर रुसी आक्रमण के परिणामस्वरूप मारे गये लड़ाकों की संख्या 2 लाख की सीमा में हो सकती है। 40 हजार से अधिक यूक्रेनी नागरिक या इससे जी अधिक संख्या में लोग मारे गये थे। आक्रमणकारियों द्वारा स्पष्ट रूप से बलात्कार, यातना और अन्य अत्याचार एक और भयानक तथ्य हैं जो सत्य को स्थापित करने और अपारिधियों पर मुकदमा चलाने के लिए नियमित अंतर्राष्ट्रीय आपारिधिक जांच चलायी जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नहीं करते थे। यह बात रखना शिक्षाप्रद होगा कि यूक्रेन की संघीय दृढ़ता से खड़े होने से ऐसा नहीं लगता कि यूरोपियन एकता जल्द ही टूट जायेगी।

लगभग 5 लाख या शायद इससे भी अधिक संख्या में लोगों ने रुस को छोड़ दिया है। ऐसा उन्होंने या तो आक्रमकता के विरोध के कारण या लामबूद्ध होने से बचने के लिए किया है। लोगों को युद्ध लड़ने के लिए भेजा गया था, जिसमें वे विश्वास नही











